प्राकृत काव्य साहित्य का इतिहास

Q-1 खण्ड काव्य की परिभाषा लिखकर प्राकृत-खण्ड काव्यकी संक्षिप्त रूप रेखा प्रस्तुत करें.

Ans- साहित्य दर्पण में खण्ड काव्य की परिभाषा देते हुए आलोचकने लिखा है कि महाकाव्य के एक देश का अनुसरण खण्ड काव्य कहलाता है। वस्तुतः खण्डकाव्य की महाकाव्य के समान प्रबन्ध प्रधान काव्य है इसमें भी प्रबन्ध के समस्त तत्वों का रहना आवश्यक माना गया है, अलंकारों का नियोजन वस्तुओं का वर्णन, रस, भाव एवं संवाद तत्व भी इस काव्य में पाये जाते है। जहाँ महाकाव्य में समस्त जीवन का चित्रण रहता है वही खण्ड काव्य में जीवन के एक पक्ष का, यह जीवन के किसी मर्मस्पर्शी पक्ष को चुनता है और उसकी अभिव्यक्ति समग्र रूप से करता है, कवि की सारगर्भित प्रतिभा एक छोटे से कथा खण्ड में चरित्र विकास की प्रतिष्ठा करती है। कथावस्तु का विकास धीरे-धीरे होता जाता है।

संक्षेप में खण्डकाव्य प्रबन्ध काव्य का वह अंग है जिसमें मानव जीवन के किसी एक साधारण अथवा मार्मिक पक्ष की अभिव्यक्ति होती है।

प्राकृत के खण्ड काव्यों में निम्नलिखित तत्व पाये जाते है।

(1) लोक जीवन (2) वैराग्य (3) प्रेमतत्व (4) वैराणिकता (5) अहिंसा, वीरता तप त्याग, आदि का संदेश.

P.T.O.

Scanned with CamScanner

प्राकृत खण्ड काव्य बहुत थोड़े हैं। उपलब्ध खण्ड काव्यों में कंसवध एवं उषाभिरुद्ध का महत्वपूर्ण स्थान है। इन दोनों ही खण्ड काव्यों के रचयिता रामपाणिवाद के पूर्वज साहित्य और नृत्य कला के परम्परा से सुपरिचित थे।

कवि का जन्म 1707 के लगभग दक्षिण भारत मलाबर के एक ग्राम हुआ था। ये संस्कृत प्राकृत एवं मलयालम तीनों ही भाषाओं के विद्वान थे। कंसवध चार सर्गों में निबद्ध रचित एक खण्ड काव्य है। इस काव्य का कथानक श्रीमद्भागवत पर आधारित है। कथावस्तु कृष्ण के व्रज से मथुरा की ओर प्रस्थान से प्रारम्भ होती है और अंत भी कृष्ण के द्वारा कंस के वध से होता है। ऐसा लगता है कि इस रचना पर कालिदास भारवि और माघव आदि संस्कृत के महाकवियों का प्रभाव पड़ा है।

कथावस्तु का केन्द्र कंसवध की घटना से है। समस्त कथावस्तु इसी केन्द्र बिन्दु के चारों ओर चक्कर लगाती है। अतः प्रधान घटना के आधार पर काव्य के नामकरण का औचित्य सिद्ध हो जाता है। भाषा भाव और शैली के दृष्टि से भी यह एक सफल खण्ड काव्य है। आश्चर्य है कि इस काव्य में प्राकृत के सर्व प्रमुख गाथा छंद का प्रयोग नहीं हुआ है। काव्योचित अलंकारों का सुन्दर प्रयोग हुआ है। कवि की कल्पनाएं हृदय ग्राही और मार्मिक है।

उषाभिरुद्ध, खण्ड काव्य के रचयिता भी रामपाणिवाद है, इसकी कविता कंसवध की

अपेक्षा निम्नस्तर की है यह ~~विक्ष~~ विज्ञान पर भी संस्कृत काव्यो का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है फिर भी बीसलदेव जैसी पोढ़ता इसमें नहीं है इस खण्ड काव्य मे भी चार सर्ग है कथा का आधार श्रीमद्भागवत है। इसमे बाणसुर की कन्या उषा को श्री कृष्ण के पौत्र अनिरुद्ध है, प्रेम काव्य की दृष्टि से यह मध्यम कोटि का काव्य है फिर भी प्रबंध काव्य के गुणो से यह काव्य युक्त है कथा वस्तु सरस है वीर और श्रृंगार रस का सुन्दर चित्रण हुआ है।

इन दो खण्ड काव्यो के अतिरिक्त एक भृङसन्देश नामक खण्ड काव्य का उल्लेख मिलता है जिसकी रचना मेघदूत के अनुसरण पर हुई है। इसमे एक विरही व्यक्ति अपनी प्रिया के पास भृङ ~~संदेश~~ द्वारा संदेश भेजता है। इस अधूरे ग्रन्थ के रचयिता का कोई पता नहीं है।